|| श्री कालभैरवाष्टकं ||

देवराज सेव्यमान पावनांघ्रि पङ्कजं

व्यालयज्ञ सूत्रमिन्दु शेखरं कृपाकरम् ।

नारदादि योगिवृन्द वन्दितं दिगंबरं

काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ १॥

भानुकोटि भास्वरं भवाब्धि तारकं परं

नीलकण्ठ मीप्सितार्थ दायकं त्रिलोचनम् ।

कालकाल मंबुजाक्ष मक्षशूल मक्षरं

काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥
२॥

शूलटंक पाश दण्डपाणि मादिकारणं

श्यामकाय मादिदेव मक्षरं निरामयम् ।

भीमविक्रमं प्रभुं विचित्र ताण्डवप्रियं

काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥

३॥

भुक्तिमुक्ति दायकं प्रशस्त चारुविग्रहं

भक्तवत्सलं स्थितं समस्त लोकविग्रहम् ।

विनिक्वणन् मनोज्ञहेमकिङ्किणील
सत्कटिं

काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥
४॥

धर्मसेतुपालकं त्वधर्म मार्गनाशकं

कर्मपाश मोचकं सुशर्मदायकं विभुम् ।

स्वर्णवर्ण शेषपाश शोभितांग मण्डलं

काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥
५॥

रत्नपादुका प्रभाभिराम पादयुग्मकं

नित्यमद्वितीय मिष्टदैवतं निरंजनम् ।

मृत्युदर्प नाशनं कराल दंष्ट्रमोक्षदं

काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥

६॥

अट्टहास भिन्नपद्म जाण्डकोश संततिं

दृष्टिपात नष्टपाप जालमुग्र शासनम् ।

अष्टसिद्धि दायकं कपाल मालिकाधरं

काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥
७॥

भूतसंघ नायकं विशालकीर्ति दायकं

काशिवास लोकपुण्य पापशोधकं विभुम् ।

नीतिमार्ग कोविदं पुरातनं जगत्पतिं

काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ ८॥

कालभैरवाष्टकं पठंति ये मनोहरं

ज्ञानमुक्ति साधनं विचित्र पुण्यवर्धनम् ।

शोकमोह दैन्यलोभ कोपतापनाशनं

ते प्रयान्ति कालभैरवांघ्रि सन्निधिं ध्रुवम् ॥

(हाथ में जल लेकर यह मंत्र बोले और
जल थाली में अथवा भूमि पर छोड़ दें)

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचर्यस्य

श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य

श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ

श्री कालभैरवाष्टकं श्री काल भैरव
प्रसन्नार्थे श्री काल भैरवार्पणमस्तु ॥

_ श्री काल भैरव अष्टक का नित्य 21 पाठ ४० दिन तक करे ..अथवा अनुष्ठान रूप में नित्य १०० पाठ रात्री में २१ दिन तक करे ...

- पूजन सामग्री में उड़द के बड़े , गुड , दही बड़े , चने , पुदी , सब्जी , मिठाई , पापड़ आदि रख सकते है !

- रात्रि में पाठ पश्चिम अथवा दक्षिण मुख होकर करे ! दिन में पूर्व मुख होकर करें !

- सिध्द होने पर कामना का संकल्प कर

पुनः अनुष्ठान करे और अंतिम दिन हवन एवं बालक भोजन कराएँ !

- हवन मन्त्र – ॐ ह्रीं क्रीं हुं ह्रीं कालभैरवाय स्वाहा
- किसी सज्जन व्यक्ति का अहित करने की भावना से श्री कालभैरव उपासना न करें ! अन्यथा भगवान काल भैरव उसी साधक का नाश कर देते है !

- स्वामी रुपेश्वरानंद आश्रम द्वारा संशोधित एवं साधना विधान

- स्वामी रुपेश्वरानंद आश्रम , ग्राम – बलुआ , जिला – चंदौली (उत्तर प्रदेश) – 232109

- Email – swamirupeshwar@gmail.com

- Phone – 7607233230

- Web site - https://

swamirupeshwaranand.in/

- Teligram Group - https://t.me/rupeshwaranandji